वियतनाम, कम्बोडिया और सिंगापुर के दौरे के दौरान 'कंबोडिया में भारतीय समुदाय के साथ संवाद'

भारत की संसद के माननीय सदस्यगण, राजदूत डॉ. देवयानी उत्तम खोबरागडे, विदेश मंत्रालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण, गणमान्य अतिथिगण, भारत के नागरिको तथा देवियो और सज्जनो:

मेरा सौभाग्य है कि मुझे कंबोडिया में भारतीय समुदाय के साथ बातचीत करने का अवसर मिला है। मैं आप सभी का अपनी और अपने देशवासियों की ओर से अभिनंदन करता हूं। भारत और कंबोडिया के संबंधों को मजबूत करने में आप सबकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

भारत और कंबोडिया के बीच घनिष्ठ सभ्यतागत और सांस्कृतिक संबंध हैं। दोनों ही देश बौद्ध संस्कृति और करुणा, सहिष्णुता एवम् अहिंसा के सिद्धांतों का पालन करते हैं। हमारी नदियां – गंगा और मेकोंग हमारी संस्कृति को संजोए हुए हैं। हमारी सभ्यता में नदियों का प्रमुख स्थान होने के कारण हमारी विशेषताएं, हमारे लोकाचार और हमारी संवेदनशीलताएं समान हैं।

कंबोडिया के अधिकांश ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्मारक भारत के साथ इसके घनिष्ठ संबंधों के परिचायक हैं, जोकि दोनों देशों के नेवीगेटरों, व्यापारियों और बुद्धिजीवियों के मध्य परस्पर संपर्क के परिणामस्वरूप स्थापित हुए हैं। अंकोरवाट, अंकोरथोम, बेयोन और अन्य ऐतिहासिक स्थल हमारे दोनों देशों के लोगों के बीच संपर्क और सांस्कृतिक संबंधों के साक्षी हैं।

मुझे बताया गया है कि कंबोडिया और भारत के लोगों के दैनिक जीवन में भाषा, रीति-रिवाज और संस्कारों में काफी समानताएँ है। ऐसा हमारे पूर्वजों की एक-दूसरे से सीखने की इच्छा के कारण ही संभव हुआ है और यह मित्रता के चिरस्थायी संबंध को दर्शाता है।

प्रवासी भारतीयों में भारतीय मूल के लोग शामिल हैं और आज अनिवासी भारतीय विश्व में सबसे अधिक शिक्षित और सफल समुदायों में से एक हैं। विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में सबसे अधिक संख्या भारतीय लोगों की है जोकि अनुमानत: 32 मिलियन से अधिक है। हमें आप पर गर्व है और हम भारतीय मूल के अनिवासी भारतीयों की महत्वपूर्ण भूमिका से अवगत हैं जो अपने मूल देश के विकास के लिए ज्ञान, विशेषज्ञता, संसाधन और बाजार की सुगमता बनाने के लिए 'सेतु' के रूप में कार्य करते हैं। मुझे बताया गया है कि कंबोडिया में भारतीय समुदाय के लोगों की संख्या भले ही कम है परंतु वे जीवंत, सक्रिय और जरूरतमंदों की सहायता करते हैं। दूसरों के प्रति ऐसी सहृदयता एक सद्गुण है और मैं संवेदनशील होने के लिए आप सभी की सराहना करता हूँ।

भारतीय लोग स्थानीय लोगों के साथ आसानी से घुल-मिल जाते है और दिवाली एवम् होली जैसे अपने त्योहार खुशी और उल्लास के साथ मनाते हैं। मुझे खुशी है कि भारत और कंबोडिया की विभिन्न सांस्कृतिक/धार्मिक प्रथाओं में समानता के कारण भारतीय लोग कंबोडिया में अपने घर जैसा ही महसूस करते हैं।

मुझे यह बताया गया है कि इंडियन एसोसिएशन इन कंबोडिया (आईएसी) विभिन्न स्वैच्छिक सांस्कृतिक, सामाजिक और सामुदायिक विकास कार्यक्रमों के माध्यम से भारत-कंबोडिया के संबंधों में सहयोग और बढ़ावा देने के लिए कार्य करता है। यह एक अच्छी पहल है और मुझे विश्वास है कि आप ऐसे प्रयास करते रहेंगे। मैं आपकी प्रगति और सफलता की कामना करता हूँ।

मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि दोनों देशों की सरकारों ने पुराने ऐतिहासिक संबंधों को और मजबूत बनाने का प्रयास किया है। 1950 के दशक में, भारत इंटरनेशनल कंट्रोल कमीशन ऑन इंडो-चाइना से जुड़ा हुआ था और सह- अध्यक्ष के रूप में हमारी भूमिका की काफी सराहना की गई थी। सभी जानते हैं कि भारत ने कंबोडिया का न केवल अच्छे समय में अपितु इसके इतिहास के कठिन समय में भी पूरा सहयोग दिया है। कंबोडिया में खमेर रूज शासन के पतन के बाद, भारत उन पहले देशों में से एक था जिसने 1981 में इसकी नई सरकार को मान्यता दी और अपना राजनयिक मिशन पुन: शुरू किया। तब से भारत और कंबोडिया की सरकार ने उच्च स्तरीय द्विपक्षीय वार्ताओं के साथ-साथ क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर बातचीत के माध्यम से अपने द्विपक्षीय संबंधों का विस्तार करने और इन्हें मजबूत बनाने के लिए मिलकर काम किया है।

यह उल्लेखनीय है कि वर्ष 2022 में भारत और कंबोडिया के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के 70 साल पूरे हुए हैं। इसके अतिरिक्त, 2022 आसियान-भारत भागीदारी की 30वीं वर्षगांठ है और इसे आसियान-भारत मैत्री वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि इस वर्ष के बढ़े हुए आपसी संपर्क से हमारे द्विपक्षीय संबंध और प्रगाढ़ होंगे।

मैं वर्ष 2022 के लिए आसियान की अध्यक्षता ग्रहण करने पर कंबोडिया को बधाई देता हूं। मैं सफल अध्यक्षता और इस वर्ष के अंत में निर्धारित आसियान शिखर सम्मेलन की सफलता के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

भारत, कंबोडिया के साथ अपने मैत्रीपूर्ण और सहयोगी संबंधों से संतुष्ट है और इन संबंधों को और मजबूत करने के लिए यत्न जारी रखेगा। हमें गर्व है कि कंबोडिया भारत-आसियान सहयोग फ्रेमवर्क, भारत-सीएलएमवी (कंबोडिया, लाओस, म्यांमार और वियतनाम) सहयोग और मेकांग-गंगा सहयोग के तहत भारत का

एक महत्वपूर्ण भागीदार है। मैं दोहराना चाहूंगा कि भारत अपनी 'एक्ट ईस्ट' नीति के माध्यम से इस मैत्री को और मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। भारत और कंबोडिया ने कृषि, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय सहयोग, उद्यमिता विकास और पर्यटन के क्षेत्र में आपसी सहयोग संबंधी समझौतों पर भी हस्ताक्षर किए हैं।

मुझे विश्वास है कि आगामी वर्षों में हमारा द्विपक्षीय व्यापार और बढ़ेगा तथा भारत के अधिक से अधिक निवेशक और व्यापारी कंबोडिया में लाभदायक उपस्थिति दर्ज कराने में सक्षम होंगे।

हमें अंकोरवाट मंदिर परिसर के साथ-साथ ऐतिहासिक विरासत के अन्य स्थलों के पुनरूद्धार में हमारे सहयोग पर बहुत गर्व है। यह अत्यंत खुशी की बात है कि हमारे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों की जड़ें बहुत गहरी हैं और इसलिए हमारे दोनों देशों के बीच पर्यटन के विकास की प्रबल संभावनाएं हैं।

भारत कंबोडिया के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सहायता करता रहा है और अभी भी कर रहा है। हमने कंबोडिया सरकार की आवश्यकताओं के अनुसार विशेष रूप से स्वास्थ्य, चिकित्सा, सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल कनेक्टिविटी संबंधी परियोजनाओं का प्रस्ताव किया है। हमने 500 करोड़ रुपये का एक परियोजना विकास कोष भी स्थापित किया है। इस कोष का उपयोग उद्योग और व्यवसाय का विस्तार करने और आपूर्ति श्रृंखला को लागत प्रभावी बनाने के लिए किया जा सकता है। हम कंबोडिया में आईटी और आईटी सेवाओं से युक्त एक 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' स्थापित कर रहे हैं।

पांच दशकों से अधिक समय से, भारतीय प्रौद्योगिकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) कार्यक्रम में भारत कंबोडिया का एक सक्रिय भागीदार रहा है। हमें खुशी है कि लगभग 2,200 कंबोडियन नागरिकों ने भारत में या ई-आईटीईसी मॉडल के माध्यम से विभिन्न पाठ्यक्रमों में भाग लिया है और हम भविष्य में इस संख्या में बढ़ोतरी की उम्मीद करते हैं।

मित्रो, हम भारत के विकास में प्रवासी भारतीय समुदाय के योगदान के महत्व को दर्शाने के लिए हर दो साल में एक बार 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस मनाते हैं। विशिष्ट योग्यता वाले व्यक्तियों को प्रतिष्ठित प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। इस अवसर को मनाने के लिए 9 जनवरी का दिन इसलिए चुना गया था, क्योंकि वर्ष 1915 में इसी दिन हमारे सबसे महान प्रवासी हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, भारत के स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करने के लिए दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस आए थे। उनके दर्शन तथा अहिंसा और सत्य के सिद्धांतों के प्रति उनके दृढ़ विश्वास को दुनिया भर में सार्वभौमिक रूप से प्रशंसा की जाती है और उनका अनुकरण किया जाता है।

आपको हमारी सभ्यता के मूल्यों की विरासत को आगे ले जाना चाहिए, जिसका गांधी जी ने शानदार ढंग से अनुपालन किया था। अब यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी आप सभी पर है कि आपके सहयोगियों, पड़ोसियों और अन्य लोगों जिनके साथ आप बातचीत करते हैं, के बीच भारत की एक सही छवि को चित्रित किया जाए। आपको हजारों साल पहले कंबोडिया के साथ बेहद मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित करने में हमारे पूर्वजों द्वारा किए गए प्रयासों को भी आगे बढ़ाना चाहिए। हमेशा याद रखें कि इस देश में आपके द्वारा किए गए कार्य न केवल आपके व्यक्तित्व के परिचायक दर्शाते हैं, अपितु कंबोडिया के लोगों को भारत की क्षमताओं और भारतीय जीवन शैली से भी अवगत कराते हैं।

जय हिंद!